॥ ओ३म् ॥

* श्री सनातनधर्म का *

भजन षोड़शा

श्रीमान् विद्वद्वर पं० कवि श्री १०८
श्रीमन्नारायण जी के शिष्य
लाला नारायणदासात्मज
रामरत्नलाल वैश्य अग्रवाल
[illegible]दोसो निवासी रचित

जिसको

पं० भी० श० ने ब्रह्मप्रेस इटावा में छपा कर
प्रकाशित किया ॥

प्रथमावृत्ति १००० } १९०७ { मूल्य ।)

श्रीगणेशाय नमः ॥

स्तुति श्रीमहादेव जी की ॥

लावनी–जय शिवशंकर सर्वेश शैलजा स्वामी। जय२ त्रिपुरारि नंदीश निरूप नमामी॥ जय त्रिगुण त्रिलोचन त्रिकालज्ञ त्रिपुरारी। जय२ त्रिशूलधारी त्रिशूलक्षयकारी॥ जयमहाकाल कर काल कृपालु खरारी। जय चन्द्रभाल शिर व्याल माल गलधारी॥ जय अगम अलख अखिलेश्वर अन्तर्यामी। जयर निरीह नंदीश॥१॥ जय पारब्रह्म पशुपती नाथ पंचानन। जय परमानन्द पुरुषोत्तम प्रभु प्रभुलाघन। जय जय भूतेश्वर भोलेश्वर भवभयभंजन। जय जय महेश मुनि भेष मदन मद मर्दन॥ जय बाघंबर धारंबरधर वृषगामी॥ जय २ निरीह॥ २॥ जय श्रुतिस्वरूप सुरभूप सदासुखराशी। जय अज अनवद्य अखंड अजित अविनाशी॥ जय कृपासिंधु करुणानिधान कैलाशी। जय ब्रह्म विश्वपति वाराणसी निवाशी॥ जय शंभु शील सागर हर शुभ सुखठामी॥ जय २ निरीह नंदीश॥ ३॥ जय नीलकंठ निर्वाणरूप निर्गुण हर। जय निराकार नाना रूप विश्वंभर॥ जय २ गिरीश गौरीश ईश गुणसागर। ज्ञानगम्य गोतीत गिरा गंगाधर॥ जय रूप अमंगल रतसुमंगल धामी॥ जय २ निरीह॥४॥ भजन नं० २–

भारत पर विपत अपार हैं, प्रभु वेग धरहु अवतार॥

हरे॥ नूतन मत अति होंय जारी, अपनी २ रीति प्रचारी ॥ हरे ॥ धर्म कर्म कुल [illegible]न विसारी, करते अत[illegible] हैं डर नाहीं नेंक तुम्हारा ॥ प्रभु० भारत ॥ विप्र देख शिर चलें उठाई । शूद्रन करें नमस्ते धा[illegible] ॥ हरे ॥ धार जनेऊ यवन इसाई, बनगे द्विज बदकारहैं, [illegible]ग अनरथ हुआ प्रचारा ॥ प्रभु० भारत ॥ मांगे भोजन अतिथि न पावें । भूखे भिक्षुक प्राण गंवावें ॥ हरे ॥ वेश्या वैठीं भोज उड़ावें । अधरम रत नर नारि हैं, पूरण कलिविभव पसारा ॥ प्रभु० ॥ साधें योग सुहागिन नारी । भोगें भोग सुविधवा नारी ॥ हरे ॥ शीघ्र लीजिये खबर खरारी । आए शरण तुम्हारहैं, को तुम विन रक्ष हमारा ॥ प्रभु० ॥

कवित्त २ [illegible]टीको जनेऊ तजें द्विजदेव सोला गणकान करें घर नीको । नीको पती न लगै पतिनी पति अन्त [illegible]वत जायकै जीको ॥ जीको जरावत पूत कपूत भयो न भयो सुवरावर हीं को । हीको न चैन सुहागिन कै विधवा के ललार सिंदूर को टीको ॥ भजन नं० ४—

क्यों धर्मसनातन हारकै अधरम पै कमर कसी है ॥ ॥ हरे ॥ मोक्ष लेउ मित्रो मनमांहीं । तजे धर्म कतहू गति नांहीं ॥ हरे ॥ धर्महीन नर नर्कन [illegible] । देखहु [illegible] विचारकै, दोऊ लोक तुम्हार हंसी है ॥ अधरम० क्यों ॥ यही धर्म तव बड़ों का प्यारा । प्राणों से भी प्या[illegible]ति

प्यारा ॥ हरे ॥ जिन को तुम नां कछू विचारा. बैठही मारकै, जाने क्या होय वली है ॥ अधरम० ॥ नृप-शिवि को जग विदित कहानी । लीन परीक्षा सुरपति ज्ञानी ॥ हरे ॥ काटि देह आप निज पाणी । धर्मशील पै धारकै, जग सुयश प्रभा विकसी है ॥ अधरम० ॥ मुनि दधीच अस्थि सुर मांगा । दीन मुनीश सहित अनुरागा ॥ ॥ हरे ॥ धर्मप्रकाश सुयश जग जागा, कहि जनरल सवार कै, क्यों पाप में वुद्धि फंसी है ॥ अधरम० क्यों ॥

भजन नं० ५–क्या साथ मित्र ले जाउगे, अधरम धनसंचय करके ॥ हरे ॥ भोजन पर साखी वन धाई । न्यायाधीश के सनमुख जाई ॥ हरे ॥ हो अशंक दो झूठ गवाही । सोचहु फिर पछताउगे, जग जरा जन्म दुख मरकै ॥ अधरम० क्या ॥ एक टके पर धर्म उठाते । गुरु देवों की किसमें खाते ॥ हरे ॥ नहीं नेंक मन में घबड़ाते । जो यम समय गंवाउगे, दुख पावहु नर्कन मरकै ॥ अधरम धन० ॥ पर संपत लख सठ दिन राती, सोचत सदा हरण की घाती ॥ हरे ॥ धन हित हनै विप्र निज हाती । नहिं तुम हीं सुख पाउगे, शिर पाप गठरिया धरकै ॥ अधरम॥ ने मदांध जग चौसर प्यारे । खेले धर्म करो सब हारे ॥ ॥ हरे ॥ अब तो चेतो मित्र हमारे । [illegible] गया सब पाउगे, खेलोगे यदी संभरकै ॥ अधरम० ॥ भजन नं० ६–

इस नर शरीर को पायके, क्या कीनीं सित्र कमाई ॥ ॥ हरे ॥ नित विषयन में फिरा दिवाना । रंच न ... हीय में आना ॥ हरे ॥ सुखको दुख दुख को सुख जाने, आपन रूप भुलायके कर अगरति ... उठाई ॥ क्या० इस ॥ साध समाधि न ध्यान लगाया । घट २ व्यापक तुझे न पाया ॥ हरे ॥ सोहम २ रटन न लाया । जड़ वृक्ष मूल बिहायके, सींचीं साखा समुदाई ॥ क्या० इस ॥ मेरी भगिनी मेरी नारी ॥ मेरा सुत मेरी महितारी ॥हरे॥ करता फिरा सदा संमारा, मोह नशे में छायके, सोया सब ज्ञान गंवाई ॥ क्या० इस ॥ ये संसार रैन का सुपना ॥ यहां नहीं है कोई अपना ॥ हरे ॥ अस विचार तज मृषा कलपना, ... हर हर्षाय के, कहि रामरत्न समुझाई ॥क्या०॥

भजन नं० ... -अस रहे विचार, वेद धर्म विधवन के ॥ हरे ॥ जिस दम पति स्वर्ग सिधारै । उस ही दम सर्व बिसारै । धारंग ... नार ॥ वेद० अस ॥ नहीं मांग सिंदूर भरावै, नहिं महिंदी करन रचावै, तजै फूलन के हार ॥ वेद० अस ॥ नहिं काजल नैन लगावै, नहिं मुख तंबोल चबावै, बिसारै सुखसंसार ॥ वेद० अस ॥ नहिं केश फुलेल बसावै नहिं बेंदी भाल सजावै, तजै सब ही श्रृंगार ॥ वेद० अस ॥ बहु रंग के वस्त्र न धारै, ... विशै ... जारै ... चंचल मन मार ॥ वेद० अस ॥ सब ... जग के छोड़ै इक प्रीति हरीपद जोड़ै, ... ब्रह्मचर्य सम्हार ॥ वेद० अस ॥

भजन नं० ८—कोटों धिक्कार, हैं इस हिंदूपनको ॥हरे॥ ... कैसे हिंदू भाई, जोदेशी खांड़ खिहाई, मौरस करी प्रचार। ... मूत्र मल नर का, औ पड़े मांस सूकर का, हाड़ ... लगी ... ॥ हैं० कोटों॥ तुम सोचहु जीव हजारों, के प्रान ... गए यारो, कीना नहीं विचार ॥ हैं० कोटों। जो अखबारों में पाया, सो रामरत्न कह गाया, अपनी मति अनुसार ॥ हैं० कोटों ॥ भजन नं० ९—

पीते मदरा यार, कैसे द्विज जाती तुम॥ हरे ॥ भव कुल के धर्म नशाए, दादों के नाम डुबाए, देखहु मूढ़ विचार ॥ कैसे० पीते ॥ इस हिंदूपन का भाई, क्यों बट्टा दिया लगाई, वैदिक धर्म विसार ॥ कैसे० पीते ॥ जब मदरा मद में आवो, गिर २ कै ठोकर खावो, सनें ... मूत्र तुम्हार ॥ कैसे० पीते ॥ विष्ठा सी बदबू ... नाह तुमरा मन घिरणावै, कहिता रत्न पुकार॥ कैसे० पीते ॥

भजन न० १०

कव्वाली ॥ नमस्ते शब्द ईश्वर को न की भंगी चमारों को। नहीं नाई कहारों को नहीं मूरख गंवारों को ॥ अजब है रीत इस मत की करौ तौ ख्याल अए यारो। नवें आचार्य को चेले नवें गुरू शिष्य सारों को ॥ नमस्ते ॥ नवें हैं स्वामि को ... नवें ... भी सेवक को। नवें खाविंद को औरत नवें खाविंद नारों को ॥ नमस्ते॥ रतन ... धर्म सब छोड़ा हुआ है ज़ोर कलियुग का। नवें हैं पुत्र माता को नवें

माता कुमारीं को ॥ नमस्ते शब्द ॥ दादरा सारंग ॥०

सुनियो कान लगाय, जी स्वामी के कथन को ॥टेक

सत्यारथ प्रकाश में अपने ए हैं खुद छपवाये ॥ जी स्वामी० सुनियो ॥ पाक बनावन से जाती है द्विज की बुद्धि नसाय ॥ जी० सुनियो ॥ इस से करैं शूद्र रसोई खावैं द्विज हर्षाय ॥ जी स्वामी ॥ धन २ बाबा जी की मतिको रामरत्न कहि गाय ॥ जी स्वामी० सुनियो ॥ (भजन नं०१२)

भक्षाभक्ष विचार, अम स्वामी जी भाषा ॥ हटे ॥ जो पशू काम नहिं आवें, कर होम अग्नि में खावें, उन्हें सब वर्णिक यार ॥ अम० भक्ष ॥ जो मांस न कोई खावें, तौ अधिक पशू बढ़ जावें, दुखी करदें नर नार ॥ अम० भक्ष ॥ तुम कैसे द्विज हो भाई, जो गुरु की सीख मिटाई, अहिंसा करो प्रचार ॥ अम० भक्ष ॥ कहै रामरत्न समुझाई, अब तो पाखंड बहाई, लेउ निज धर्म सम्हार ॥ अम० भक्ष ॥

लावनी नं० १३

सत्यारथ प्रकाश में अपने स्वामी जी ने लिखा संभार।
सो सब सुनियो समाजी मित्र कहै जन रत्न पुकार ॥
सोलह से उन्नीस वरष तक की कन्या को है अधिकार।
खुद वर ढूंढ़े होय जो सब विध अपने ही अनुसार ॥
पुरुष नारि की करै परीक्षा और पुरुष की करले नार।
होय न कोई रोग में दोनों ही सब भांति निहार ॥ फेर पिता मातादिक से करवालें विवाह या खुद मुखत्यार । इन

...रत लिखाये गुरु बाबा ने मित्र तुम्हार ॥ (भजन नं० १४)
... मित्रो करौ विचार, पक्षपात कू तज कै ॥ टेर ॥ गो-... में हिंसा करनी, गो वंश ...ओं की बरनी, गुरु बाबा ... तु... ॥ पक्ष० मित्रो ॥ ... बीस सेर नहिं पावै, तौ मुर्दा ... जलाय ... कूषी मंझार ॥ पक्ष० मित्रो ॥ जो मुक्त भी हो जाते हैं, सो फेर लौट आते हैं, यहीं प्यारे संसार ॥ पक्ष० ॥ जो नहीं लौट के आते, तौ बहुत जीव मुक्त जाते, भीड़ हो जाती भार ॥ पक्ष० मित्रो ॥ स्वामी अपकार किया है, या स्तुपकार किया है, करौ मन निर्णय यार ॥ पक्ष०॥

सवैया नं० १५

कुल रीत कुरीत भई सगरी कलि काल कुचाल तेरी करनी। द्विज देवत मानत जानत ना ... नूतन पंथ कथा बरनी ॥ पति के परदेश गये बिरियां ... पति औ... करे घर की घरनी। ग्यारह वर योग भ... विध... ... कारन कांप उठी धरनी ॥ सवैया नं० १६

नित ही उठके व्यभिचार करें न विचार करें न... की करनी। भगिनी सुता पुत्र वधू सिगरी तिन को समझैं अपनी धरनी ॥ विधवान को धर्म लखैं न कछू भनि वृन्द अपार दुराचरनी । शुचि धर्म सनातन मेट दियो तेहि कारन कांप उठी धरनी ॥ सोरठा ॥

सुनिये सज्जन वृन्द पण्डित गुणी प्रवीन कवि।
ज्ञानवान ...तमन... क्षमा चूक कीजि... सकल ॥

श्री सनातन धर्म का भजन षोड़शा समाप्त ॥